जापान भारती

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

রঞ্জন গুপ্ত (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

208, मैंशन न्यू ताकानावा

2-10-15 ताकानावा

मिनातो कू

तोक्यो 108

फोन/ई-मेल

सौरभ : 03-3462-0853

singals@ml.com

रंजन कुमार : 03-3473-6043

ranjan@twics.com

फैक्स

सुशील : 03-3832-1641

अंक ५ विक्रम संवत् २०५२ जुलाई १९९५

इस अंक में

हमारा पन्ना

आपका पन्ना

विचार

आजकल

प्रसंग

व्यंग्य

संस्कृति

काव्यधारा

बचपन

कला

निवेदन

कविता

प्रबन्ध

रान्ना

हमारा पन्ना

आप सब से मिला स्नेह-समर्थन हमारे लिए बहुत उत्साहजनक है। मिताका स्थित एशिया अफ्रीका भाषा विद्यापीठ से श्री योइचि युकिशिता लिखते हैं कि इस विद्यापीठ में विश्वविद्यालय के स्तर पर दो वर्ष एशिया अफ्रीका की भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं, जिन में हिंदी भी है । इस पाठ्यक्रम के अतिरिक्त शाम और शनिवार को कई कक्षाएँ भी चलती हैं । युकिशिता जी स्वयं तो भारती के लिए लिखेंगे ही, अपने छात्रों से भी लिखवाने का प्रयत्न करेंगे।

हिरोको नागासाकी का पत्र पा कर ये विश्वास होने लगा है कि जापानी पाठक भी रुचि ले रहे हैं ।

अब तक हिंदी, संस्कृत, बंगला, तमिल और मराठी में हम-आप अपनी बात एक दूसरे से कह चुके हैं । इस अंक में राजस्थानी बात भारती के पन्नों को सुशोभित कर रही है ।

गुरु का हमारे जीवन-मूल्यों में विशेष महत्त्व है । इसी विषय पर स्कंदपुराण के कुछ श्लोक मूल संस्कृत में हिंदी अनुवाद सहित प्रस्तुत हैं

- सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ,

'जापान भारती' की प्रतियाँ मिली हैं । तुम इस प्रयास के लिए सचमुच बधाई के पात्र हो । रचनाएं एवं संपादकीय बड़े रोचक थे । मुझे आशा है कि तुम इसका प्रकाशन यथायोग्य जारी रखोगे । मुझे कई भाषाओं की सामग्री का एक पत्रिका में प्रकाशन का विचार पसंद आया । शायद इनके अनुवाद को शामिल करना अच्छा हो । मुझे यह पत्रिका अवश्य ही भेजते रहना । यदि मैं इस प्रयास में कोई सहायता कर पाया तो बड़ी खुशी होगी ।

तुम्हें यह जान कर खुशी होगी कि हमारे देश में प्रतिभाशाली स्कूली विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अनुसंधानों में रुचि को प्रोत्साहित एवं बरकरार रखने के लिए एक प्रयास किया जा रहा है । अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास में १२ से १७ वर्ष के स्कूली विद्यार्थियों को खुद ही चुने हुए प्रश्नों पर प्रयोग करने के अवसर दिए जाते हैं और प्रयोगशाला की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं । इनमें से एक छात्र 'एड्स' पर प्रयोग कर रहा है । उसका मूल विचार यह है कि यदि 'सेलों' के कुछ विशेष गुणों को अपने 'मॉडल' के अनुसार नियंत्रित किया जा सके तो इस दिशा में महत्वपूर्ण विकास हो सकते हैं । दूसरे स्थानों पर भी ऐसी योजनाओं की बातें हो रही हैं ।

संपर्क बनाए रखना । शुभकामनाओं सहित,

प्रो. शचीन्द्र नाथ महेश्वरी, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग,
आई. आई. टी., दिल्ली

मैंने अपने मित्र के घर पर आपकी ***'जापान भारती'*** पत्रिका पढ़ी । पढ़ कर बहुत खुशी हुई कि आप जापान में रह कर भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं । इसके लिए हम सभी हिन्दुस्तानी भाइयों की तरफ से आपको शुभकामनाएं । एक तरफ हमारे हिन्दुस्तान में लोग हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी होने के बावजूद पश्चिमी देशों की ओर भाग रहे हैं । और दूसरी तरफ जापान जैसे व्यस्ततम देश में, जहाँ पर इंसान की जिन्दगी अपनी न हो कर मशीनी जिंदगी में तब्दील हो गई है, इंसान इस तरह की जिंदगी में और मायाजाल में फंस गया है, इस सबसे अलग हो कर आपने अपना कीमती समय निकाल कर हिन्दी को प्रोत्साहन दिया है, तथा हिन्दी संस्कृति को विदेश में जगाने की आशा की जो किरण दिखाई है उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं ।

अशोक रावत, योकोहामा

'जापान भारती' का तीसरा अंक पा कर काफी प्रसन्नता हुई । आपके इस नेक काम के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे तो यह सोच कर ही गर्व होता है कि हमारे नजदीकी मित्र इस शुभ काम में तल्लीन हैं । हांलाकि मेरी अपनी शिक्षा दशम श्रेणी तक हिन्दी में हुई, लेकिन उस समय से आज तक (तकरीबन दस वर्ष) हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने का अवसर न मिलने से जीवन में खालीपन महसूस होता था । आपका यह प्रयास इस खालीपन को दूर करने में सफल हुआ है।अंक तीन के सभी लेख काफी रोचक तथा ज्ञानवर्धक लगे । प्रोफेसर हरभजन सिंह पर लिखे गए सम्मान लेख से लगा कि पंजाबी साहित्य का भविष्य

काफी उज्जवल है । हरजेन्द्र चौधरी की रचना 'स्नोगेम्स' काफी रोचक थी, खासकर अंत तो यथार्थ के काफी नजदीक मालूम हुआ । हिन्दी कविता में हाइकू शैली का प्रयोग मेरे लिए नया था ।

हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के बारे में मेरा एक सुझाव है। कृपया लेख की भाषा का नाम हिन्दी में भी व्यक्त करें ।

अगर किसी भी प्रकार से इस महान कार्य में सहयोग कर सकूं तो भाग्यशाली समझूंगा । यहाँ क्लीवलैंड में हिंदी के विख्यात कवि श्री गुलाब खंडेलवाल जी का निवास है । मैं उनसे अपनी पत्रिका के लिए लिखने का आग्रह करूंगा ।

'जापान भारती' के चतुर्थ अंक की प्रतीक्षा में ।

संजय गुप्ता, क्लीवलैंड, ओहायो, अमरीका

'जापान भारती' के अंक मिले - श्री कोगाजी ने मेरे पास भिजवाया । जापान में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन वास्तव में बड़ी बात है । इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं । प्रकाशन योग्य लेखन मेरे पास हुआ तो उसे आपके अवलोकनार्थ अवश्य भेजूँगा । 'जापान भारती' निरंतर विकास करती रहे, आप स्वस्थ-सानंद रहें - यही हार्दिक कामना है ।

लक्ष्मीधर मालवीय

'जापान भारती' के अंक मिल रहे हैं । अत्यधिक प्रसन्नता है कि सुदूर देश में भी भारतीय संस्कृति की पहचान बनी हुई है । 'जापान भारती' इसके लिए सहयोग देती है, वह सराहनीय है । अच्छी बात है कि हिन्दी भाषा को सरल और सुबोध रखा गया है और विविधता लाने का प्रयास किया जा रहा है । पत्रिका अपने प्रारम्भिक रूप में भी मन को प्रसन्न और आकर्षित करती है ।

अधिकाधिक शुभकामनाएं !

विक्रम तिवारी, नौयडा

आशा है , आप लोग सानंद हैं । जापान भारती के प्रथम तीन अंक मुझे मिले । उनमें भारत और जापान के बारे में रोचक सामग्री पढ़कर मैं बहुत प्रसन्न हुई । मैं अगले अंक का इंतज़ार कर रही हूँ ।

शुभ कामनाओं सहित,

हिरोको नागासाकी

'जापान भारती' भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद । इसको देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई । जापान में बैठ कर हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की सेवा करने वाले मित्रों को मेरा नमस्कार । आपका यह प्रयत्न सफल हो, व्यापक बने और सबल हो, यही कामना है । अगर समय निकाल पाया तो आपके लिए कुछ लिख कर भी भेजूंगा ।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक, संपादक, पी. टी. आई. 'भाषा', नई दिल्ली

गुरु गीता
(श्री स्कंदपुराण)

अनन्याश्चिंतयन्तो ये सुलभं
परमं सुखम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोरासाधनं
कुरु ।।

अनुवाद : जो व्यक्ति गुरु का चिन्तन अनन्य भाव से करते हैं, उन्हें परम सुख अर्थात् मोक्ष सुलभ हो जाता है । इसलिए सभी प्रकार के प्रयत्नों से गुरु की उपासना करनी चाहिए ।

नित्यं ब्रह्म निराकारं, निर्गुणं,
बोध्येत्परम्।
भायसन् ब्रह्मभावं यो दीपो
दीपान्तरं यथा ।।

अनुवाद : जो नित्य, निराकार, एवं निर्गुण परब्रह्म का बोध कराता है तथा जिस प्रकार एक दीपक अन्य दीपकों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार अन्य लोगों के लिए जो ब्रह्म-भाव को प्रकाशित करता है, वह गुरु है ।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।
गुरुमन्त्रसमो नास्ति तस्मै
श्रीगुरवे नमः ।।

अनुवाद : गुरु आदि हैं, अनादि हैं; गुरु परम देवता हैं । गुरु से प्राप्त मंत्र (अथवा मंत्रणा) सदृश कोई अन्य मंत्र नहीं है । उन श्री गुरु को नमस्कार ।

चंद्रभूषण झा,
सेंट स्टीफ़न्स कॉलेज,
नई दिल्ली

प्रदर्शनियाँ और मेले तो लगते ही रहते हैं, पर सन् १९४० में न्यूयॉर्क वर्ल्ड फेयर में एक बहुत प्रेरणादायक घटना घटी । स्कूली छात्रों के लिए आयोजित विज्ञान मंडप में आई. बी. एम. कम्पनी के संस्थापक टॉमस वाट्सन की मुलाकात हुई, विज्ञान प्रदर्शनी के २३ वर्षीय निदेशक हेनरी प्लैट से ।

प्लैट ने वाट्सन से आई. बी. एम. के कार्यालय में बच्चों के लिए एक ऐसी प्रयोगशाला खोलने का अनुरोध किया, जहाँ हर शाम प्रतिभाशाली छात्र मिल-जुल कर अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि और ज्ञान-वृद्धि कर सकें । प्लैट को निराशा का मुँह नहीं देखना पड़ा । शीघ्र ही इस प्रयोगशाला की संस्थापना हुई और लगभग ३५ छात्र इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

द्वितीय विश्व युद्ध के अगणित शिकारों में से यह प्रयोगशाला भी एक रही और केवल १८ माह के पश्चात कार्यक्रम समाप्त करना पड़ा।

किंतु इससे संबद्ध अधिकांश छात्रों ने विज्ञान या चिकित्सा की दुनिया में नाम कमाया। इनमें से दो - डॉ. जोशुआ लेडरबर्ग तथा डॉ. बैरी ब्लूमबर्ग - को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया । सम्भवतः ये मेधावी व्यक्ति आई.बी.एम. के उस प्रयोगात्मक कार्यक्रम के बिना भी जीवन में बहुत तरक्की करते । पर उन तीव्र लेकिन अपरिपक्व मस्तिष्कों को जागृत करने का कुछ श्रेय तो इस कार्यक्रम को जाना ही चाहिए ।

द्वितीय विश्वयुद्ध में परमाणु बम बनाकर अमरीका ने विजय प्राप्त की । परंतु जब ४ अक्तूबर, १९५७ को सोवियत संघ ने पहला कृत्रिम उपग्रह, स्पूतनिक, अंतरिक्ष में छोड़ा और फिर १२ अप्रैल, १९६१ को सोवियत संघ के ही यूरी गैगरिन अंतरिक्ष में जाने वाले प्रथम मनुष्य हुए, तो अमरीकी बुद्धिजीवियों में खलबली मच गई । अंतरिक्ष की दौड़ में पिछड़ने के कारण जानने के लिए बहुत सोच-विचार किया गया । निष्कर्ष यह निकला कि अमरीकी हाई स्कूली छात्रों की गणित कुशलता अपर्याप्त रही ।

सरकार, विश्वविद्यालयों तथा प्रबुद्ध वर्ग ने मिलकर देश भर में स्कूली शिक्षा सुधारने का एक जोरदार अभियान चलाया । देश भर में विशेष गणित प्रशिक्षण शिविर लगे तथा गणित ओलम्पियाड आयोजित किए गए । स्कूली अध्यापकों को, विश्वविद्यालय-स्तर के प्रोफेसरों ने पाठन की नई तकनीकों से परिचत कराया । भौतिक शास्त्र पर रेज़निक व हैलिडे की प्रसिद्ध पाठ्य पुस्तक का लेखन भी इस अभियान से संबंधित गतिविधियों में से एक था ।

२१ जुलाई, १९६९ को अमरीका के नील आर्मस्ट्रॉंग को चंद्रमा पर कदम रखने वाला पहला मनुष्य बनने का गौरव प्राप्त हुआ और तब यह कार्यक्रम सार्थक सिद्ध हुआ ।

युवा पीढ़ी ही समाज और देश का भविष्य है । इसके मानसिक और सांस्कृतिक विकास की महत्ता से हम सब भली-भाँति परिचित हैं । पर आगे बढ़ने की अंधी होड़ में शायद इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते ।

टॉमस वाट्सन का अनुकरण कर पाना तो बहुद सुखद होगा, पर हेनरी प्लैट क्या कुछ कम था ?

सौरभ

इस स्तंभ के लेखक आप भी हो सकते हैं । अपने आसपास की ज़िंदगी को देख कर अनेक विचार उपजते होंगे, आपके मन में भी । उन्हें कागज़ पर लिख डालिए । विचार बांटिए ।

देर से आए - दुरुस्त आए

आखिरकार अमरीकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन के अधिकारियों ने मान ही लिया कि परमाणु शस्त्र अप्रसार के प्रश्न पर भारत और पाकिस्तान को एक ही स्तर पर रखना उचित नहीं है। अमरीकी नौसैनिक कमाण्डर एडमिरल रिचर्ड मैके ने पिछले दिनों एशिया–प्रशांत मामलों की संसदीय उपसमिति के समक्ष स्पष्ट किया कि इस मामले में भारत की दोहरी चिंता को समझना होगा । उनका कहना था कि भारत को पाकिस्तान की परमाणु क्षमता का तो ख्याल रखना ही है , लेकिन इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे चीन की परंपरागत और परमाणु क्षमता में भी खतरा नज़र आता है । एडमिरल मैके के इस बयान से भारत की सुरक्षा चिंताओं के प्रति अमरीकी रक्षा मंत्रालय की सोच साफ झलकती है !

अवसान एक विभूति का

भारत में मुक्त विश्वविद्यालयी शिक्षा के अग्रणी प्रवर्तक प्रोफेसर जी.राम रेड्डी नहीं रहे । ६५ वर्षीय प्रोफेसर रेड्डी दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए "इंटरनेशनल कॉउसिल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन एण्ड कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग" का पुरस्कार प्राप्त करने लंदन गए हुए थे । वहीं दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। वे इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के सँस्थापक कुलपति और कनाडा में "कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग" के प्रथम उपाध्यक्ष रहे । इस महान विभूति को सादर नमन ।

एक धारावाहिक श्रीराम की बहन शान्ता पर

चौंकिए मत, पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीराम की एक बड़ी बहन थी शान्ता । नई दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान के अनुसार श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण के बालकाण्ड के नवम्, दशम् एवम् एकादश सर्ग में ऋष्यश्रृंग ऋषि के साथ राजा दशरथ की बेटी शान्ता के विवाह का वर्णन मिलता है । इसी कथा पर श्री ऋषि केड़िया एक टेलिवीजन धारावाहिक का निर्माण कर रहे हैं । उनका कहना है कि इस पौराणिक कथा का आधार 'आध्यात्म रामायण' है । लगभग ६० कड़ियों वाले इस धारावाहिक में कई ऐसे तथ्य सामने आएंगे जिनके बारे में अब तक आम जानकारी बहुत कम है। जैसे यह पता लगेगा कि शान्ता की माँ कौन थी ? डॉ. गंगाप्रसाद विमल के परामर्श और कमलेश्वर के चुटीले संवादों से तैयार इस धारावाहिक का संगीत रच रहें हैं, लोकधुनों और शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ संगीतकार नौशाद । अभी नायिका की भूमिका के लिए तलाश है उपयुक्त कन्या की !

हम हैं ईमानदार

यह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की बात नहीं है । हाल ही में एक अन्तर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण में ***ईमानदार*** और ***विश्वसनीय*** कौम के रूप में भारतीयों को इस्राइलियों और फ्रांसीसियों के बाद तीसरे स्थान पर रखा गया है । सर्वेक्षण ने भारतीयों की ***सहनशीलता, बुद्धिमत्ता और लचीलेपन*** को सराहा है ।

नाम ही पहचान है

आज की भागती दौड़ती ज़िंदगी में भला कौन किसे याद रखता है । आए दिन सुनते हैं कि फलाँ कलाकार या फलाँ खिलाड़ी गुमनामी की ज़िंदगी जी रहा है । पर अपना छोरा गंगा किनारे वाला यानी अमितवा, जी हाँ बिल्कुल सही समझे आप भारतीय फिल्मों के एंग्री यँगमैन अमिताभ बच्चन की लोकप्रियता की मिसाल हाल में न्यूयार्क में मिली। हुआ यूँ कि एक आलीशान डिपार्टमेंट स्टोर में खरीदारी के बाद जब अमिताभ ने क्रेडिट कार्ड से भुगतान करना चाहा तो दुकानदार ने पहचान पुष्टि के लिए गवाही माँगी । अमिताभ ने कहा किसी स्थानीय भारतीय से फोन पर पुष्टि कर लें। दुकानदार बेचारा जब तक फोन करता स्टोर के बाहर अमिताभ प्रेमियों का जमघट लग गया। हर कोई अमिताभ का बिल चुकाने को तैयार। कहिए है न नाम का कमाल !

✱✱✱✱

जादुई नाम

शराब करे खराब - बचपन से सुनते आए हैं यह बात। पर जापानी जनजीवन में कैसे रंग दिखाए शराब । बता रही हैं इस बार.....

मिवाको कोएजुका

दिलबहार, मस्ताना, चाँदनी, शौकीन ,और फिर अप्सरा ...ये नाम कितने प्यारे हैं । मुझे बहुत ही आकर्षक लगे ये नाम हिन्दी समाचार पत्र में पढ़ कर।

इधर जापान में ऐसे असँख्य नाम हैं जिनके हिन्दी में अर्थ निकलते हैं जैसे :– हिम प्रदेश, कोशि प्रदेश का गौरव, श्वेत लहरें, कमख्वाब, सफेद सारस पक्षी, भव्य प्रकाश, सफेद हिरण, पीला चेरी फूल, जाड़े का आलूचा पुष्प.....

जी हाँ, ये नाम हैं शराब के । हिन्दी भाषा का अध्ययन शुरु करने के करीब तीस वर्ष बाद ही मुझे इन हिन्दी नामों की जानकारी हुई, मगर इस दुख भरे समाचार के साथ कि शादी की खुशी में पीते हुए अनेकों को मौत का सामना करना पड़ा ।

इधर जापान में चावल से बनी "सके" यानि शराब, दैवी पेय मानी जाती है। चावल से बनी शराब जीवन देने वाली होती है, पुनर्जन्म सम्भव करती है, शुभारम्भ का मंगलगान करती है।

अधिकाँश जापानी विवाहों में भगवान के समक्ष , पति–पत्नी होने की शपथ लेते समय "सके" का आचमन लेने की परम्परा चली आ रही है। बड़े–छोटे, भिन्न आकार के तीन पात्रों में तीन–तीन बार में ज़रा– ज़रा सी "सके" डाली जाती है, जिसे भावी पति–पत्नी पारी पारी से पीते हैं । अगर दुल्हन ने होठों से पात्र को स्पर्श–भर किया तो दूल्हा अपनी बारी में पूरी पी लेगा। इस तरह पति–पत्नी के सम्बन्ध की नौ बार पुष्टि होती है । उसके बाद नवदम्पति के माता–पिता, सगे–सम्बन्धी सब अपने पात्र से बस एक बार "सके" पीते हैं । कुछ महिलाएँ तो पात्र का स्पर्श–भर करती हैं। इस प्रकार पति–पत्नी का सम्बन्ध सुदृढ़ रूप से स्थापित हो जाता है। विवाह के समय की शराब जानलेवा नहीं, दाम्पत्य सम्बन्ध की साक्षी होती है ,उसका अभिनन्दन करती है।

मंगलमय नववर्ष दिवस का भव्य स्वागत "सके" के साथ सम्पन्न किया जाता है । ४ सितम्बर १९९४ को अति–आधुनिक कानसाई अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आए यात्रियों को "सके" से भरा पात्र पेश किया गया और कामना की गई कि नए हवाई अड्डे का शुभारम्भ निरापद हो। देवालयों से सम्बद्ध खेतों में धार्मिक रीति के साथ धान की रोपाई करते समय कामना की जाती है कि देश–भर में धान की फसल अच्छी हो ,और इस मंगलकामना के समय खेत में "सके" शराब अर्पित की जाती है ताकि खेती के देवता प्रसन्न हो जाएँ। मकान का निर्माण आरम्भ करने से पहले भूमि पूजन के समय धरती माता को "सके" का अर्घ्य देकर निरापदता की मंगलकामना की जाती है ।

जापान के राष्ट्रीय खेल सूमो के विजेता पहलवान को "सके" से सम्मानित किया जाता है । चुनाव में विजयी प्रत्याशी के समर्थक विजय की खुशी में "सके" पीते हैं ।

चीनी संस्कृति के प्रभाव में जापान में भी माना जाता है कि "सके" शराब सैंकड़ों औषधियों से बढ़ कर होती है और सीमा के भीतर "सके" पीना स्वास्थ्यवर्द्धक है ।

लोग कहते हैं , चेरी फूल देखने का आनन्द "सके" पिए बिना पूरा नहीं होता। उदासी रह जाती है।

दुखी मन को शांत करने के लिए भी लोग "सके" पीते हैं, पता नहीं उन्हें कितनी सफलता मिलती है। इस बारे में एक गीत याद आता है :–

सके पीती हूँ मैं अकेली , मगर
लगता है विदाई के आँसू पी रही हूँ
जिसे भुलाने को पीती हूँ मैं,
उभरता है रह-रहकर उसीका चेहरा गिलास में ।

****

कोबे के रेस्त्रां में चार्वाक का चेला

जैसे ईश्वर की महिमा अपार है, वैसे ही पार्टी शब्द की महिमा भी अपरम्पार है । जिस तरह स्वप्न हमारे मन की लीला है, उसी तरह यह संसार भी ईश्वर की लीला है । ईश्वर लीला रचता है तो पार्टी भी लीला रचती है या रच सकती है । ईश्वर के अनेक नाम–रूप हैं– भगवान, ब्रह्म, प्रभु, राम, ऊपर वाला .....और अगर धर्मनिरपेक्ष नीति पर चलें तो अल्लाह, क्राइस्ट वगैरा भी। पार्टी शब्द एक है पर उसके रूपार्थ अनेक हैं । उसके विराट रूप के दर्शन करने हों तो कांग्रेस, बी.जे.पी. ,जनता पार्टी , बी.एस.पी. वगैरा के रूप में उसे पहचाना जा सकता है। पार्टी का दूसरा रूप है 'एंड पार्टी' वाला रूप – जैसे, 'टाटा एंड पार्टी', 'बिरला एंड पार्टी', 'हर्षद मेहता एंड पार्टी' , 'फूलन देवी एंड पार्टी' वगैरा–वगैरा। ब्याह शादी मे नाचने–गाने–बजाने वाले अनेक दल भी अपने को 'एंड पार्टी' कहलवाना पसंद करते हैं । पर मुझे न तो ईश्वर में ज़्यादा दिलचस्पी है और न ही ऊपर चर्चित किसी पार्टी में। मैं तो शुरू से ही खाने–पीने वाली पार्टी – यानी दावत का दीवाना रहा हूँ। ईश्वर के जिस रूप के लिए मेरे मन में हर रोज़ भक्ति भाव उमड़ता है , उसे शास्त्रों में अन्न–ब्रह्म कहा गया है । आस्तिक–नास्तिक सब लोग उसके भक्त हैं । जल–ब्रह्म को भी जोड़ लिया जाए तो दोनों 'ब्रह्मों' की भक्ति की समन्वित भक्ति को मिलाकर ओसाका में एक भारतीय रेस्त्राँ का नाम बन जाता है 'पीना–खाना' । वैसे भारत में भूख प्यास मिटाने की प्रक्रिया का नाम 'खाना–पीना' है। जापान तक आते–आते यह शब्द युगल कई बार उलट–पुलट होकर 'पीना–खाना' बन गया। यानी भारत के अधिकतर लोग भूखे ज़्यादा हैं , प्यासे कम । (एकदम खाली पेट भला कोई आदमी कैसे पी सकता है !) भारत में प्यास लगती है तो नल–नहर , कुआँ–टयूबवैल , नदी–जोहड़ , जिसका भी पानी मिले, पी लेते हैं । जापान में प्यास लगने का मतलब बीयर शराब की इच्छा होना है। या फिर कम से कम सड़क किनारे की वैंडिग मशीन से जूस , कोका कोला या पेप्सी लेकर हलक भिगोना है। भारत के लोग दुनिया भर में बदनाम हैं कि हम खाने–पीने की बातें बहुत करते हैं। बातों के रस में खाने का रस भी शामिल हो जाता है। मुझे खाने–पीने की बातें करने और लिखने का बराबर शौक है। खाते–पीते भारतीय हों या पीते–खाते जापानी – मुझे तो सब बहुत प्यारे लगते हैं । असल में, कम से कम, इस मामले में मुझे पूरी मानवता से प्यार है । अहम् ब्रह्मास्मि ! वसुधैव कुटुम्बकम !!

एक कहावत है – ' दोस्त वही जो संकट में काम आए । ' देशकाल में यात्रा करते–करते शब्द , कहावतें और मुहावरे उसी तरह अपना रूप और अर्थ बदल लेते हैं जैसे कि नेता लोग कार में यात्रा करते–करते चुपके–से पार्टी बदल लेते हैं । जापान में रहते–रहते मैंने इस कहावत को इस तरह बदल लिया है – ' दोस्त वही जो पार्टी में बुलाए । '

बहुत बार मैं इस बात को लेकर दुखी हो जाता हूँ कि दुनिया में दोस्तों का इतना अकाल क्यों है ?

पिछली सर्दियों में मैं एक शाम इसी दुख: में डूबा हुआ था कि एक कोबेवासी भारतीय मित्र ने फोन करके पूछा ' संडे की शाम आपका क्या प्रोग्राम है ? ' मैं थोड़ा घबराया कि ऐसा न हो कि उन पर कोई संकट हो और मेरी एक शाम खराब हो जाए । मैंने गोल–मोल जवाब दिया तो उन्होंने बात को उघाड़ा । मैं गद्‌गद् हो उठा । पता चला कि वे एक पार्टी यानी दावत करने जा रहे हैं । मैंने तुरंत स्पष्ट शब्दों में वादा किया कि मैं आपकी पार्टी ज़रूर 'जॉयन' करूँगा । बात–बात में धन्यवाद बोलने की जापानी परंपरा का निर्वाह भी मैंने 'दो–तीन' बार कर डाला । इस बात पर उन्होंने

मुझे झिडक दिया । शुक्रवार की ठंडी शाम खुशगवार हो उठी ।

मेरे सच्चे दोस्त ने 'नेक्सट संडे' कहा था – यानी कि २२ जनवरी की शाम को । अपने उतावलेपन के कारण मुझे खूबसूरत ग़लतफ़हमी हो गई कि १५ जनवरी की शाम को बुलाया है । इसी ग़लतफ़हमी के चक्कर में बेकार ही मुझे कोबे के चक्कर काटने पड़े । मैं सात बजे की बजाय साढ़े छह बजे ही रेस्त्राँ के सामने पहुँच गया और सड़क के उस पार चक्कर काटने लगा । उस समय मुझे अपने दोस्त की याद सता रही थी । उसे जल्दी आ जाना चाहिए था । कितनी देर हो गई, अब तक क्यों नहीं आया ? सवा सात बज चुके थे! .... खैर, मैंने सड़क पार की , और उस भारतीय रेस्त्राँ के गेट के सामने खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा । प्रतीक्षा करता रहा....करता रहा .....

मेरा दोस्त अपने तीन–चार हिंदुस्तानी–पाकिस्तानी मित्रों के साथ शिन–कोबे स्टेशन की तरफ से आता दिखाई दिया।

साढ़े सात से सात पैंतीस के बीच 'बीयर' का पहला गिलास मेरे भीतर उतर चुका था । यानी कि जल–ब्रह्म की भक्ति और बातें साथ–साथ चल रही थीं । साढ़े आठ बजे तक कैलिफोर्निया के अंगूरों से बने सोमरस ने मेरी कुँडलिनी जागृत कर दी थी । रेस्त्राँ का माहौल किसी प्राचीन तपोवन की तरह आध्यात्मिक होता जा रहा था । जो दो वेटर हम लोगों कि सेवा कर रहे थे, उनमें एक जापानी लड़की थी तथा एक भारतीय नौजवान । मेरे सच्चे दोस्त ने भारतीय नौजवान वेटर को कुछ समझाया। देखते–देखते मुर्गा–मछली,नान–पापड,वगैरा उपेक्षित हो गए । सामने टेबल पर 'कोबे–बीफ' सज गया। 'स्पेशल ऑर्डर' देकर मेरे दोस्त ने मुझ जैसे नास्तिक हिंदुओं को 'भ्रष्ट' करने का प्यारा–प्यारा षड़यंत्र रचा।

मैं तो 'भ्रष्ट' होने को तैयार बैठा था । मैने उस समय किसी को भी यह बताने की ज़रूरत नहीं समझी कि मैं पहले से ही भ्रष्ट हूँ । पर भारत में तो गऊ माता घास और कूड़े में मुँह मारती फिरती है,गँदा पानी पीती है । कोबे की गायों को तो बढ़िया वाली 'बीयर' पिलाकर पाला–पोसा जाता है। गोमांस में रमी हुई 'बीयर' का स्वाद कितना बढ़िया होता होगा !

मैं यह सोच–सोचकर उल्लसित हो रहा था कि अचानक मेरे सामने की मेज़ और मेरे नीचे की कुर्सी बुरी तरह डगमगाने लगी। रेस्त्राँ में अचानक अँधकार छा गया । सब दोस्तों के चेहरे लापता हो गए । मैंने अपने–आपको स्थिर करने के लिए हिलती हुई मेज़ को पकड़ने की कोशिश की तो मेरे हाथ बिस्तर पर पड़ी हुई किताबों के ढेर पर पड़े । पूरा घर भादों की गंगा को पार करती नाव की तरह डगमगा रहा था । मुझ नास्तिक हिंदु के मुँह से निकला –' हे भगवान ! हे भगवान ! त्राहिमाम् !!'

मुझे जाग आ चुकी थी । मैं अपने घर ओसाका में सोया हुआ था कोबे के भारतीय रेस्त्राँ में बैठा विश्व प्रसिद्ध गोमांस खाने का सपना देखते–देखते हिल उठा था । वह सत्रह जनवरी १९९५ ,की सुबह थी । हानशिन महाविनाशकारी भूकम्प वाली कुख्यात सुबह !

उस सुबह अपनी जान बचाने के लिए मैं अचानक नास्तिक से आस्तिक हो उठा था । उस सुबह से पहले मैं अपने–आपको 'चार्वाक का चेला' समझता था, उस सुबह के बाद मैं उपनिषदों के ऋषियों का गंभीर शिष्य बन गया।

पहले कभी–कभी सब तरह के हिंदू निषेधों का उल्लंघन करने के लिए मेरा मन बेचैन हो उठता था,अब अंधविश्वासों तक की उपेक्षा करते हुए अजीब–सा डर लगता है ।

पहले कोई पूछ लेता तो मैं अपनी उम्र अड़तीस साल बताता था । अब कोई पूछता है तो मैं बेझिझक कहता हूँ ––मेरी और मेरे भारत की उम्र कम से कम पाँच हज़ार साल है । पर यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि मुझ जैसे आम हिंदुस्तानी के भीतर ये पाँच हज़ार साल कहाँ सोये पड़े रहते हैं !

–प्रोफेसर हरजेन्द्र चौधरी

जुलाई १९९५

भारतीय पध्दति में जन्मदिन मनाना – *डॉ. शशि तिवारी*

आज सभी देशों के लोग अपने लाड़ले बच्चों का जन्मदिन मनाते हैं । इंसी खुशी करते हैं, उपहार देते हैं, और कुछ न कुछ पारम्परिक कार्यों का विधान करते हैं ।

सभी की यही कामना होती है जैसे प्रसन्नता और कुशलता के साथ आयु का यह वर्ष बीता वैसे ही आगे भी बीते। बच्चा जीवन में सभी प्रकार की सफलताएँ पाए ।

भारत देश में प्राचीन काल से ही जन्मदिन मनाने के प्रमाण मिलते हैं। इस शुभ अवसर पर सभी इष्ट मित्र मिलकर शास्त्रों के अनुसार विधिवत पूजन करते हैं। हवन या पूजन द्वारा भगवान की वंदना उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की लिए की जाती है। मन की शुद्धि, बुद्धि का विकास और आयु की वृद्धि - ईशकृपा पर ही तो निर्भर है ।

जन्मदिन को वर्षगाँठ भी कहते हैं । कच्चे सूत की डोरी में आयु की वर्ष गणना के लिए माता गाँठ लगाती है ।

संस्कार के समय घी का जलता दीपक ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक है। उससे जीवन को ज्ञानमय और प्रकाशमय बनाने की आवश्यकता प्रकट होती है।

प्रज्वलित दीपक की महिमा का संबंध ईश्वर, ज्ञान, बुद्धि और चेतना से माना जाता है । तभी हमारा महावाक्य है -तमसो मा ज्योतिर्गमय - हम अंधकार में नहीं प्रकाश में जलाएँ ।

जलते हुए दीपक के पास ही एक कलश स्थापित किया जाता है और उस पर नारियल रखा जाता है।

इन दोनों वस्तुओं का भी प्रतीक रूप अर्थ जानने के लिए जानने योग्य है ।

कलश देवताओं और असुरों को द्वारा किए गए समुद्र मंथन में से निकला था , जिसमें अमृत था। इसलिए पूजाविधि में कलश को अमरत्व का स्वरूप माना जाता है । इसके अमृत जल को भगवान के चरणामृत के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

नारियल 'श्रीफल' कहलाता है और यह श्री, सम्पत्ति, विभूति और कान्ति का प्रतीक है । इसके पूजन से पूजक की आयु और सम्पत्ति बढ़ती है ।

इस प्रकार भारतीय पद्धति में जन्म दिन मनाने में जो प्रमुख वस्तुएं प्रयोग में आती हैं, उनसे जीवन में ज्ञान, अमरता, सम्पत्ति आदि की कामनाएं व्यक्त होती हैं । इस सबसे युक्त हो कर ही जन्मदिन मनाना सार्थक होता है।

देश और समाज के योग्य नागरिक बनाने के लिए इनकी महत्ता सर्वदा, सर्वत्र, सर्वविदित है ।

✱✱✱✱

आगामी व्रत और त्यौहार

१३ जुलाई - शिवपूजा आरम्भ
२५ जुलाई - ॐशिवरात्रि
३० जुलाई - हरियाली तीज
१ अगस्त - नागपंचमी
३ अगस्त - तुलसी जयंती
१० अगस्त - रक्षा बंधन
१५ अगस्त - स्वतंत्रता दिवस
१७ अगस्त - श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

केलको हँस न देना

राम -'अपने बाल तो देख,जैसे खेत में घास उग रही हो।'
श्याम -'तभी मैं सोचूँ मेरे सामने गधा क्यों खड़ा है ।'

एक हाथी और चींटी

आइस-पाइस खेल रहे थे । हाथी की ढूँढने की बारी आई तो चींटी मंदिर में छिप गई ।
हाथी बोला - 'आइस-पाइस ।'
चींटी ने पूछा - 'तुम्हें , मैं कैसे दिखाई दी ?'
हाथी बोला - 'तुम तो दिखाई नहीं दीं , लेकिन तुम्हारी चप्पल मुझे दिख गई ।'

पतझर की एक शाम

देखता रहा लगातार सारी खुराफात
सुनता रहा कानाफूसियां चुपचाप
नहीं किया किसी को बेनकाब
निकाली नहीं खराश
दूर से करता रहा सलाम, सुबह-शाम
छाती ठोंक कर खड़ा रहा सरे आम
सहता रहा थपेड़े अकेले ही अकेले
आज क्या हुआ इसको
नोच रहा एक एक करके
अपने सिर के बाल
सड़क के किनारे खड़ा बूढ़ा पेड़ ।

नियति

दौड़ाते रहो अक्ल के घोड़े
करते रहो उठापटक
मिलाते रहो कुलाबे ।
उलट सकती है किस्मत की बाजी
ढह सकता है रेत का महल
तरसना पड़ सकता है
दाने-दाने को
खोदना पड़ सकता है हर रोज नया कुआं
सपने में भी नहीं आया ख्याल ।
धरी रह गई शतरंजी चाल
फांकनी पड़ी धूल, डूबता रहा मस्तूल
गुम हो गए गुलाबी फूल
पानी हो गया अपना ही खून।

-प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल

घण्टी धीरे बजाना

श्श्श् घण्टी धीरे बजाना, ईश्वर जो है सो गया है ।
मंदिर टूटे, मस्ज़िद टूटे, और टूटे गुरुद्वारे
आशाओं के, बान्ध सब्र के, टूट गए हैं सारे
असहाय, असमर्थ इन्सान ऊपर को जब देखे
रसायनों की धुन्ध बस है ओज़ोन को जो भेदे
विश्वास पर है आसमान टिका, वो भी अब लो गया है
श्श्श् घण्टी धीरे बजाना, ईश्वर थक कर सो गया है ।
रुधिर सरिता के बहाव पर अस्थियों के बांध यहाँ हैं
गिद्ध चीलों के घोंसले, गीदड़ों की मांद यहाँ हैं
धर्मगुरुओं की धाक जमी, प्रोग्राम, क्रुसेड, जिहाद हुए हैं
घर, समाज, रिश्ते सब टूटे, परिवार उजड़े, बर्बाद हुए हैं
हम सब का क्रिया-कर्म तो, जन्म संग ही हो गया है
श्श्श् घण्टी धीरे बजाना, ईश्वर बलि पा सो गया है ।
अपनी साख बचा सके ना, वो सोता है तो सोने दो
निशा-घड़ी निकल गई जो, अब बिहान तो होने दो
अन्तर्मन में झाँकें हम, आत्म-विलयमान हो जाएं
अपनी रिक्तियों को जीतें, आओ हम भगवान हो जाएं
श्श्श् घण्टी धीरे बजाना, ईश्वर खोया, सो गया है ।

-सुबोध कुमार 'नीरज',
चैपेल हिल, नॉर्थ कैरोलाइना, अमरीका

मेरी कविता अधूरी रह गई

जब मैं कविता लिखने बैठी
वैसे ही आई प्यारी बेटी
जिद करके वह पेन ले गई
और मेरी कविता अधूरी रह गई ।
लेकिन, लिखने का मूड जो आया
-मैंने ऑफिस में, साहब से फरमाया
साहब बोले -
'लेडी, नॉट अलाउड'
तुम बंद करो अपना यह साउंड
दिखता नहीं ऑफिस चल रहा है , फिर भी तुम्हें मखौल लग रहा है।
अच्छा तो, बतलाऊँ, कविता की पंक्ति -
धुंधले आसमान में, तारे यों चमकें
जैसे, मैली चादर से, मक्के छटके
फिर तो, दिमाग से ही उतर गई
और मेरी कविता अधूरी रह गई ।

-सुशीला कांकरिया

बोलू या

भर उन्हात बोलू राजा
चल दंवात भिजल्या गोष्टी
तू समज कालच्या थिजल्या
शापीत भयानक रात्री
जुळवून पाकळ्या सगळ्या
बघ उभी कशी मी उत्फुल्ल
तो दुजाच रात्रीला होता
घेऊन तरि कुणी भिल्ल
लोटू दे पूर कसलेही
तू बोल, लव्हाळे मी बनले
की प्रलयकाठची आहे
मी सजिव समाधी सतिची

परका होशिल तू

पहाट होता सोनसकाळी पंख
मोकळा तू
साजणा, परका होशिल तू ।।
धृ।।
स्वप्नपाकळ्या जोवर भंवती
गंधस्वराना तोवर भरती
छंदीफंदी खग गुणगुणता
त्यांचा होशिल तू
चांदण्यात भिजभिजून खुलता
कमळण भोळी तुजवर भुलता
रंग चुंबिता तुझ्यात विरता
नामनिराळा तू
क्षणस्पशाने गंधित झाला
पराग राहिल इथे कोवळा
दूर दूर उडउडून जाता
वळून न बघशिल तू
साजणा परका होशिल तू

मी - माझे जग

डोक्यावरुन पांघरुण घेऊन मी
जगातुन उठून जाते
मला हवे तसे मग पुढल्या
क्षणी घडत जाते
कुणीतरी माझ्यासाठी प्रफुल्ल
फूल आणत असते
मी तर त्याच्या बागेमधले
डुलते फूल बनले असते
एक रंग, एक गंध, शाल
कुणी विणीत असते
रेषेसाठी धागा बनून मीच पुढे
सरकत असते
वल्हवीत नाव दूर कुणी
क्षितिज पार होत असते
मीच चांदणी त्याची तर
विरहाची भीती मुळीच नसते
सुपामधला जीव माझा
सारखा कुणी भरडीत असते
त्याच्यासाठी इकडे मी टपोर
मोती घडवीत रहाते
ऋतू ऋतू तुडवीत कुणी
अज्ञातात जात असते
पायातळी त्याच्या तरी माझे
काळीज हसत रहाते
डोक्यावरुन घेऊन पांघरुण
जगातून जरी उठून गेले
माझे श्वास घेऊन हाती माझे
जग जगत राहिले

परतून येशील

परतून तू येशील रे
घरटयात या अनमोल रे।।
धृ।।
नादावुनी लहरीसवे
रानात रमसी कोठल्या !
मैदान मोहक मोकळे
धरबंद नुरला नर्तना
मदचाल वेधक घातकी
भलत्याक्षणी हरशील रे -१
आणा किती शपथा किती
धिःकारल्या तू साजणा
तरी चिंब पाकळी सावरी
तव बिंब निष्ठुर पाखरा
क्षण थांब चिवचिव ऐकता
रंगातुनी चळशील रे -२
तुज नाठवे जुइ-मोगरा
मस्तील झुलता अंबरी
त्यांचीच गीते अेकदा
होती तुझ्या ओठावरी
सांजेस सरता वासना
वस्ती पुन्हा स्मरशील रे
परतून तू येशील रे -३
फुलवीत राहिन कोवळया
कलिका तुझ्या स्वप्नांसवे
देइन त्यांना साउली
आकाश अन् तारांगणे
गळल्या परांसह मागुनी
शिळ घालुनी चुकशील रे
परतून तू येशील रे -४

पुष्पा मेढेकर

राजस्थानी बात

- १ -

धरती धौरा री, आ तो मीठा बौरा री
आ तो देवा ने शरमावे, इण में दैव रमण ने सावे
इण री जस नर-नारी गावें,
आ धरती बौरा री, आ तो मीठा बौरा री

- २ -

अरे घास की रोटी ही जब वन बिलावड़ो ले भाग्यो
नानो सो बालक (अमर सिंह) चीख पड़यो, राणा रो सोयो दुख जागियो
जद याद करूँ हल्दी, जौ, बैरिया रौ खून बहावे है
राणी पद्मिनी रौ जौहर, रजवाड़ी शान बढ़ावे है

नरेश मुकुट सिंह

एकता ही बल है

एक बार कबूतरों का एक झुंड आकाश में उड़ता हुआ जा रहा था। झुंड के सभी कबूतर खाने की तलाश में थे पर घंटों तलाश करने पर भी उन्हें अन्न का एक दाना नजर न आया । यों ही उड़ते-उड़ते जब वे एक जंगल के ऊपर से गुजर रहे थे तब थकावट से चूर झुंड का सबसे छोटा कबूतर अचानक अपनी सारी थकावट भूल दूसरे कबूतरों की ओर मुड़ा और बोला, " भाइयों जल्दी करो, जल्दी, देखो उधर ढेरों भोजन दिखाई दे रहा है ।

कबूतरों का झुंड नीचे उतर आया । उन्होंने नन्हें कबूतर की बताई हुई जगह की ओर देखा। उनके ठीक नीचे, एक बरगद के तले, चावलों के चमकते दाने बिखरे पड़े थे ।

कबूतरों के राजा ने कहा, "आओ साथियों आओ, छक कर भोजन किया जाये। " वे सब नीचे उतरे और चावल के दाने चुगने लगे। यकायक उनके ऊपर एक जाल गिरा और सारा झुंड उस भारी जाल के फन्दों में फंस गया ।

" अब क्या होगा ? " राजा ने चिल्लाकर कहा, " हम सब जाल में फंस गये हैं। " उसी समय उन्होंने देखा कि हाथ में गदा लिए एक भारी भरकम बहेलिया उनकी तरफ आ रहा है ।

कबूतरों के राजा ने कहा, " इसके पहले कि बहेलिया हमें मारे हमें तुरन्त कुछ करना चाहिए , भाइयों मुझे एक उपाय सूझा है। आओ सब मिलकर जोर लगायें और जाल समेत उड़ चलें । याद रखो अब एकता ही हमारी आशा है । " उस समय बहेलिया जाल के नजदीक आ पहुंचा था लेकिन जैसे ही वह जाल की ओर बढ़ा वैसे ही सारे कबूतरों ने जाल का एक-एक हिस्सा पकड़ा और फुर्र से उड़ गये । कबूतरों को जाल समेत उड़ता देख बहेलिया चक्कर में पड़ गया । ऐसी अनहोनी उसने पहली मरतबा देखी थी। यह सोचकर कि ' शायद जाल गिर ही जाये ' वह कबूतरों के पीछे दौड़ने लगा ।

जब कबूतरों ने बहेलिये को अपने पीछे आते देखा तो वे, पहाड़ियों और घाटियों के, टेढ़े-मेढ़े मार्ग से उड़ने लगे । बहेलिया उनका पीछा नहीं कर सका और थोड़ी ही देर में निराश होकर वापस लौट गया ।

जब बहेलिये ने कबूतरों का पीछा छोड़ दिया, तब उनके राजा ने कहा, " मित्रों, हमारा आधा खतरा तो टल गया है । अब मेरी राय में हम सब पहाड़ी की ओर, मन्दिरों की नगरी के पास जायें । वहां मेरा परम मित्र चूहा रहता है । वह अपने दांतों से हमारे जाल को काट कर हमें आजाद कर देगा । " इस पर सब कबूतर खुश हो " हां, हां चलो" का शोर मचाते हुए कुछ ही देर में मन्दिरों की नगरी के पास जा पहुंचे ।

जब कबूतरों का पूरा झुंड, एक साथ, चूहे के बिल के पास उतरा तो उनके पंखों की फड़फड़ाहट से चूहा डर गया और बिल के आखिरी कोने में जा छिपा । कबूतरों के राजा ने उसे बाहर से पुकार कर कहा कि हम तुम्हारे पास सहायता के लिये आये हैं । राजा की आवाज सुनकर चूहे ने बिल के द्वार पर आ कर बाहर झांका और अपने मित्र को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ ।

" भाई, हम एक बहेलिये के जाल में फँस गए थे । " कबूतरों के राजा ने कहा । "लेकिन हम जाल समेत उड़ भागे। अब तुम कृपा कर हमें इस जाल से छुटकारा दिलाओ।"

" अभी लो, " चूहे ने कहा, " मैं अभी तुम्हारे बंधन काटे देता हूँ । " एक-एक कर चूहे ने सब कबूतरों के बंधन काट डाले और उन्हें मुक्त कर दिया । "

कबूतरों ने अपने प्राण बचाने वाले चूहे को धन्यवाद दिया और चहचहाते हुए उड़ गए ।

देखा, एकता में कितना बल है !

पंचतंत्र से

बिशन शर्मा की एक और प्रेम-मय कृति

নিবেদন

প্রবস জীবনে মানুষ বহু অভিজ্ঞতা অর্জন করে। ছোটবেলা থেকে বড় হয়ে ওঠে যে পরিবেশে, তার সাথে আপাতদৃষ্টিতে মিল নেই এমন কোনো জিনিষ চোখে পড়লে মানুষের মন হয়ে ওঠে অনুসন্ধিৎসু। খুঁজে বার করার ইচ্ছে হয় কার্যকারণ সম্পর্কের। কার্যোপলক্ষে বেশ কিছু বাঙালী মাঝে মাঝে জাপানে আসা যাওয়া করেন, বা কিছু দিনের জন্যে এখানে থাকেন। তাঁদের সকলেরই নিজের নিজের অভিজ্ঞতা যথেষ্ট মূল্যবান। জাপান ভারতীর দ্বিতীয় সংখ্যায় এইরকম অভিজ্ঞতার কথা প্রথম প্রকাশিত হয়। এই সংখ্যায় আবারও জাপানকে একজন ভারতীয়ের চোখে কিরকম লেগেছে তা নিয়ে একটি নিবন্ধ প্রকাশিত হোলো। যাঁরা জাপানে এখনও আছেন, বা যাঁরা সম্প্রতি জাপান ছেড়ে চলে গিয়েছেন, তাঁদের সকলের কাছে আমাদের অনুরোধ, জাপান সম্বন্ধে নিজেদের অভিজ্ঞতার কথা লিখুন জাপান ভারতীতে।

বাঙালীর জীবনে শিল্প সংস্কৃতির স্থান খুবই গুরুত্বপূর্ণ। তাই নানান্ কাজের ফাঁকে বাঙালী নিজেকে জড়িয়ে রাখতে ভালোবাসে সাংস্কৃতিক ক্রিয়াকলাপের মধ্যে। ইদানীং তাই তোকিও শহরে অনুষ্ঠিত হয়ে গেলো বিভিন্ন সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান। তার মধ্যে উল্লেখযোগ্য, শ্রীমতী তোমোকো খাম্বের আয়োজিত রবীন্দ্র ও নজরুল জয়ন্তী। একই অনুষ্ঠানে রবীন্দ্রনাথ এবং কাজী নজরুল ইসলামের প্রতি শ্রদ্ধা জানিয়ে স্থানীয় বাঙালী এবং জাপানীরা নাচগানের আয়োজন করেন। অপেশাদার গ্রুপগুলি যথেষ্ট কৃতিত্বের পরিচয় দেন অনুষ্ঠান পরিবেশনায়। এর পর অনুষ্ঠিত হয় সাহিত্য সম্মেলন। এই অনুষ্ঠানে যোগদান করেন দুই বাংলার বিশিষ্ট সাহিত্যিকেরা, এবং ভারতবর্ষ থেকে আগত একজন প্রখ্যাত হিন্দী সাহিত্যিক। জাপানী সাহিত্যিকদের সাথে বিভিন্ন বিষয় নিয়ে মতামতের আদানপ্রদান করা হয় এই অনুষ্ঠানে। সাহিত্য আলোচনার পর শ্রোতাদের মনোরঞ্জন করেন স্থানীয় বাঙালীরা।

গত ৮ই জুলাই বিরাট সাফল্যের মধ্যে দিয়ে স্বামী বিবেকানন্দের ১৩৩ তম জন্মবার্ষিকী উদযাপিত হয় তোকিও শহরে। সারাদিনব্যাপী এই অনুষ্ঠানটি বিশদ ভাবে আলোচনার দাবী রাখে। গত সংখ্যায় পত্রিকাটি আরও সম্প্রসারণ করার ইচ্ছা প্রকাশ করা হয়েছিলো। সেই প্রসংগে সকলের কাছে অনুরোধ জানানো হয় বিভিন্ন ভাবে জাপান ভারতীকে সাহায্য করার জন্যে। ইতিমধ্যে কিছু কিছু সাহায্যের প্রতিশ্রুতিও পাওয়া গেছে। আমাদের আশা খুব শীঘ্র ই আপনাদের সকলের কাছ থেকে সাহায্য পেয়ে জাপান ভারতীকে কৈশোরে পৌছে দিতে পারা যাবে। - **রঞ্জন গুপ্ত**

কবিতা

আয়না

আমার শোবার ঘরে একটা
আয়না রেখেছি
একদম শোবার ঘরে।
ছোট্ট ফ্ল্যাটের অন্যান্য
স্থানের চাইতে শোবার
ঘরটাই ওর পক্ষে যথেষ্ট
উপযুক্ত।
রোজই রাতে শুতে যাবার
আগে অনেকক্ষণ ধরে
আয়নাটার সামনে দাঁড়িয়ে
কথা বলি, সঙ্গ দিই।
কারণ আমি ছাড়া এ
পৃথিবীতে ওর প্রেমিক আর
কে আছে?
দিন যায়, মাস যায় ঋতু
বদলায়, আমার কালো চুল
সাদা হয় কিংবা চোখের দৃষ্টি
বদলায়।
বদলে যাওয়া সবকিছুর
মধ্যেও যেন একাকী, নিজস্ব
অস্তিত্ব
বজায় রেখে চলেছে
অনন্তকাল।তাইতো আমি
ভালবাসি ওর করুণ, শান্ত
শূন্য হৃদয়ের আলিংগন।
আমি ছাড়া এ পৃথিবীতে ওর
প্রেমিক আর কে আছে?

অলর্ক কুন্ডু

ইচিকাওয়া শি, চিবা

এক ভারতীয় মহিলার চোখে জাপানী মহিলা

এক বছরের জন্য জাপানে এসেছিলাম। সেই সুবাদে অল্প কিছু অভিজ্ঞতা সঞ্চয় হয়েছে আমার। জাপানী ভাষা শেখা ও জাপানী মহিলাদের সঙ্গে বন্ধুত্ব পাতানো - এক ঢিলে দুই পাখী মারবো বলে, এক প্রতিষ্ঠানে যোগ দিই। ভাষা শেখার ফাঁকে ফাঁকে নানান রকম অনুষ্ঠান, উৎসবের মধ্যে দিয়ে কিছু জাপানী মহিলার সঙ্গে বন্ধুত্ব স্থাপন হয়। দুপক্ষের ভাবের আদান প্রদানের মধ্যে দিয়ে একটা সম্পূর্ণ ছবি তৈরী হয় তাঁদের জীবনধারা বা ধ্যানধারণার উপর। সেই অভিজ্ঞ তারই কিছু কিছু এখানে বলছি।

চল্লিশোর্ধ্বা এক শিক্ষিতা, জাপানী মহিলা বড় উদ্বেগের সূরে একদিন বলেন যে এখনকার মেয়েরা পাশ্চাত্যকে নকল করে। স্বামীর সাথে একেবারে বন্ধুর মত ব্যবহার করতে শুরু করেছে। এই নতুন ধারা তাঁকে খুব চিন্তায় ফেলেছে। এ বিষয়ে সমচিন্তাধারার কয়েকজন নাকি মিটিং করে আলোচনাও করেছেন। আকাশ থেকে পড়ি। সার জীবনের সঙ্গীর সাথে সুস্থ বন্ধুত্ব গড়ে তুলেছে- কি এমন অপরাধ করেছে সে সব নবীনারা যে তার জন্যে মিটিং করতে হবে? চল্লিশোর্ধ্বার মত, স্বামী হলেন সংসারের ও গৃহের কর্তা। তাঁর প্রাপ্য অনেক সম্মান, সমীহ - বন্ধুত্ব নয়। সেই মহিলাকেই আবার দেখি, স্বচ্ছন্দে স্বামীর গাড়ী চালিয়ে বেড়িয়ে যান নিজের প্রয়োজনে। স্বামী-স্ত্রী সম্পর্কের ভিতে যেখানে এত দূরত্ব বা ভয়, সেখানে ইচ্ছেমত স্বামীর গাড়ী ব্যবহার করার অধিকারবোধ, তাঁর আসে কি করে?

এক জাপানী মহিলা আমাকে তাঁর বাড়ীতে নিমন্ত্রণ করেন। পথ নির্দেশ হিসাবে তিনি রাস্তার ধারের এক 'ডেনিস রেস্তোরা'কে ল্যান্ডমার্ক করেন। যেদিন তাঁর বাড়ী যাবার কথা, সেদিন সকালে দারুন উৎকণ্ঠায় তিনি আমায় টেলিফোন করেন। মহিলা লিখেছিলেন Deny's, আসলে বানান হবে Denny's। অন্ততঃ চারবার গোমেন না সাই, সুমিমাসেন বলেন, একটি 'এন'(N) ভুল করার জন্য। এর দরুন যদি আমার রাস্তা চিনতে অসুবিধা হত, সেই চিন্তাতেই তিনি অনুশোচনায় ভুগছিলেন। সামান্য জিনিষের মধ্যেও এত বিস্তারিত ও সঠিক হবার চেষ্টা আমাকে অবাক করেছিল। কেবল তাই নয়। আমি কিছু ওরিগামী শিখতে চেয়েছিলাম। তাঁর বাড়ী পৌঁছে দেখি কাগজ, কাঁচি, ইত্যাদি আগে থেকে সাজানো। বহু পরিশ্রম করে তিনি লাইব্রেরী থেকে পাঁচটি বই সংগ্রহ করে রেখেছেন, যাতে বিস্তারিত ভাবে আমি ওরিগামীর মূল বিষয় বুঝতে পারি। এই আন্তরিক নিষ্ঠাবোধ আমাকে মুগ্ধ করেছিল।

কিছুদিন আগে আমার পিতৃবিয়োগ হয়। জাপানী বন্ধুরা বিভিন্ন উপায়ে তাঁদের সমবেদনা জানান আমায়। একজন নিজের হাতে সেলাই করা দুটি রুমাল উপহার দিয়ে বলেন, তাঁর তরফ থেকে একটি রুমাল আমার মা'কে দিতে। রুমালের উপর অতি যত্নে আঁকা দুই মহিলা হাত ধরে আছেন। এর মাধ্যমেই তিনি আমার মা'কে সান্ত্বনা দিয়েছেন। আমার মার ও এই মহিলার, দুজনের কোন পরিচয় নেই, ভাষার বিশাল ব্যবধান। তবু পৃথিবীর ওপ্রান্তের একজনের শোকে, এপ্রান্তের অন্যজনের কি দারুণ আন্তরিকতা।

একটি মজার গল্প শুনেছিলাম আমার জাপানী বন্ধুর কাছে। জাপানের শহরতলীর দিকের কথা। কোন অতিথি যদি খাবার পর সে বাড়ীতে থেকে যাবার আমন্ত্রণ পান, অতি মধুর ব্যবহারের মধ্যে দিয়ে তা প্রত্যাখ্যান করা উচিত। আমন্ত্রণের পিছনে অতিথিকে

বুঝে নিতে হবে যে সে বাড়ীর কর্ত্রী অনেক অসুবিধার সম্মুখীন হবেন সেই অতিথি থাকলে। মহিলাদের মধ্যে কিছু চমৎকার ভাষার বাঁধুনি আছে এসব উপলক্ষে। কোন অপ্রিয় বা অপছন্দকে ঢেকে দেন ভাষার মাধুর্য্যে। আবার অন্য দিকটাও দেখেছি। এক জাপানী মহিলা টি সেরিমনি, জাপানী নৃত্য ইত্যাদির সাথে জড়িত। তাঁর এই নিজস্ব জগতে তখন তিনি কারুর স্ত্রী বা মা নন। তাঁর ছোট আট বছরের বাচ্চাকে আকুল হয়ে বলতে শুনেছি যে সে তার মায়ের অনুষ্ঠান দেখতে চায়। অন্যসময়ে যিনি স্নেহময়ী মা, তিনিই কঠোরভাবে সে অনুরোধে বাধা দিলেন। সে দলের প্রায় প্রত্যেকেই সায় দিলেন। ভাষার মাধুর্য্য বা মাতৃত্ববোধ, কোনটাই প্রকাশ পায় নি তাঁর আচরণে।এবার আমার দেশে ফেরার পালা। জাপানে কি দেখলাম বা কেমন লাগলো, এপ্রশ্ন অনেকেই করবেন। ভাল, মন্দ মিশিয়ে অনেক কিছু বলবার থাকবে। ভাল লেগেছে এদের নিষ্ঠাবোধ, সময়ানুবর্তিতা, পরিচ্ছন্নতা; খারাপ লেগেছে এদের নিজেদের মধ্যে গুটিয়ে থাকা বা শ্রেষ্ঠভাবাপন্নতা।তবে এক বাক্যে বলতে পারি,আমার অনেক মনোযোগ আকর্ষণ করেছেন এদেশের মেয়েরা। যাদের কথা এখানে বলেছি, বা যাঁদের কথা বলার সুযোগ হয় নি - যাবার বেলায়,তাঁদের সকলের জন্যে রইলআমার আন্তরিক শুভকামনা।

সৌগতা মল্লিক, কলকাতা

রান্না

হেঁশেল থেকে

বছর দশেক আগের কথা। জাপানে প্রথম এসে মাছের বাজার ঘুরে হয়রান। কোথায় গেলো আমাদের বাঙালীর প্রিয় সব মাছ- ইলিশ, রুই, কাতলা, কই। এ যে শুধু অচেনা মাছে ভরা। আঁতিপাতি করে খুজছি, যদি কিছু চেনা মাছ চোখে পড়ে। লোকের ভিড়ে, আর স্বামীর ব্যস্ততায় মাছ আর খোঁজা হয়ে ওঠেনা। ফিরে যাই চিকেন হাতে নিয়ে। রোজ রোজ চিকেন কারই বা মুখে রোচে? বন্ধুবান্ধব ও হয়নি তখন, যে জিজ্ঞেস করে জানবো দেশী মাছ কি পাওয়া যায়। সাহস করে আবার বেরোই মাছ খোঁজার অভিযানে। এবার সংগে কেউ নেই। সুতরাং নিশ্চিন্ত মনে খানিকটা ঘোরা যাবে। শামুক, গুগলি, ঝিনুক, অক্টোপাস এ সবের ভিড় ঠেলে এগোতে এগোতে হঠাৎ চোখ পড়ে যায় চিঙড়ি মাছের দিকে। ঢেলে সাজানো রয়েছে ছোট বড় বিভিন্ন রকমের চিঙড়ি মাছ। এত বড় এবং এত রকমের চিঙড়ি মাছ দেশে সচরাচর চোখে পড়ে না। কি যে আনন্দ হয়েছিলো সেদিন কি বলবো। এখন অবশ্য জাপানে চেনা মাছ পাওয়ার জন্য এত কষ্ট করতে হয় না। তবু বাঙালীর খাদ্য তালিকায় চিঙড়ি মাছের এক স্বতন্ত্র স্থান। যে কোনো ভাবেই প্রস্তুত হোক না কেন, তা আমাদের রসনার তৃপ্তি যোগায়। আজ চিঙড়ি মাছের অল্প পরিচিত একটা রান্নার কথা লিখছি, যা আশা করি আপনাদের সকলের পছন্দ হবে। এই পদটির নাম - চিঙড়ি ঘোঁকা।

উপকরণঃ

মটর ডাল : ১০০ গ্রাম, ছোট চিঙড়ি: ২০০ গ্রাম, আদা বাটা: ১ চা চামচ, পেঁয়াজ বাটা: ২টি পেঁয়াজের, রসুন বাটা: ২ কোয়া, আলু: ২ টি, ঘি: ২বড় চামচ, গরম মশলা: ১ চা চামচ, নুন ও চিনি: আন্দাজমতন, তেল: ১/২ কাপ, হলুদ: ১ চা চামচ

প্রণালীঃ

মটরডাল ও চিঙড়ি মাছ সামান্য ভাপিয়ে নিয়ে mixer এ দিয়ে মিহি করে নিন। নুন ও চিনি দিয়ে গরম তেলে কষিয়ে নিন। কষা হয়ে গেলে একটি থালায় ছড়িয়ে দিন। ছুরি দিয়ে ছোট ছোট চৌকো পিস করে নিন। আলু দুটো ডুমো করে কেটে অল্প ভাজুন। ডাল ও চিঙড়ির ঘোঁকাগুলিও ভেজে রাখুন। এইবার তেলে সমস্ত মশলা কষে নিন। তাতে ভাজা আলু ও জল দিন। আলু সেদ্ধ হলে ঘোঁকা দিয়ে অল্প আঁচে পাঁচ মিনিট ফোটান। গরম মশলা গুঁড়ো ও ঘি দিয়ে নামিয়ে নিন।

- রীতা কর,

ইয়োকোহামা, জাপান

বুঝে নিতে হবে যে সে বাড়ীর কর্ত্রী অনেক অসুবিধার সম্মুখীন হবেন সেই অতিথি থাকলে। মহিলাদের মধ্যে কিছু চমৎকার ভাষার বাঁধুনি আছে এসব উপলক্ষে। কোন অপ্রিয় বা অপছন্দকে ঢেকে দেন ভাষার মাধুর্য্যে। আবার অন্য দিকটাও দেখেছি। এক জাপানী মহিলা টি সেরিমনি, জাপানী নৃত্য ইত্যাদির সাথে জড়িত। তাঁর এই নিজস্ব জগতে তখন তিনি কারুর স্ত্রী বা মা নন। তাঁর ছোট আট বছরের বাচ্চাকে আকুল হয়ে বলতে শুনেছি যে সে তার মায়ের অনুষ্ঠান দেখতে চায়। অন্যসময়ে যিনি স্নেহময়ী মা, তিনিই কঠোরভাবে সে অনুরোধে বাধা দিলেন। সে দলের প্রায় প্রত্যেকেই সায় দিলেন। ভাষার মাধুর্য্য বা মাতৃত্ববোধ, কোনটাই প্রকাশ পায় নি তাঁর আচরণে।এবার আমার দেশে ফেরার পালা। জাপানে কি দেখলাম বা কেমন লাগলো, এপ্রশ্ন অনেকেই করবেন। ভাল, মন্দ মিশিয়ে অনেক কিছু বলবার থাকবে। ভাল লেগেছে এদের নিষ্ঠাবোধ, সময়ানুবর্তিতা, পরিচ্ছন্নতা; খারাপ লেগেছে এদের নিজেদের মধ্যে গুটিয়ে থাকা বা শ্রেষ্ঠভাবাপন্নতা।তবে এক বাক্যে বলতে পারি,আমার অনেক মনোযোগ আকর্ষণ করেছেন এদেশের মেয়েরা। যাদের কথা এখানে বলেছি, বা যাঁদের কথা বলার সুযোগ হয় নি - যাবার বেলায়,তাঁদের সকলের জন্যে রইলআমার আন্তরিক শুভকামনা।

সৌগতা মল্লিক, কলকাতা

রান্না

হেঁশেল থেকে

বছর দশেক আগের কথা। জাপানে প্রথম এসে মাছের বাজার ঘুরে হয়রান। কোথায় গেলো আমাদের বাঙালীর প্রিয় সব মাছ- ইলিশ, রুই, কাতলা, কই। এ যে শুধু অচেনা মাছে ভরা। আঁতিপাতি করে খুজছি, যদি কিছু চেনা মাছ চোখে পড়ে। লোকের ভিড়ে, আর স্বামীর ব্যস্ততায় মাছ আর খোঁজা হয়ে ওঠেনা। ফিরে যাই চিকেন হাতে নিয়ে। রোজ রোজ চিকেন কারই বা মুখে রোচে? বন্ধুবান্ধব ও হয়নি তখন, যে জিজ্ঞেস করে জানবো দেশী মাছ কি পাওয়া যায়। সাহস করে আবার বেরোই মাছ খোঁজার অভিযানে। এবার সংগে কেউ নেই। সুতরাং নিশ্চিন্ত মনে খানিকটা ঘোরা যাবে। শামুক, গুগলি, ঝিনুক, অক্টোপাস এ সবের ভিড় ঠেলে এগোতে এগোতে হঠাৎ চোখ পড়ে যায় চিঙড়ি মাছের দিকে। ঢেলে সাজানো রয়েছে ছোট বড় বিভিন্ন রকমের চিঙড়ি মাছ। এত বড় এবং এত রকমের চিঙড়ি মাছ দেশে সচরাচর চোখে পড়ে না। কি যে আনন্দ হয়েছিলো সেদিন কি বলবো। এখন অবশ্য জাপানে চেনা মাছ পাওয়ার জন্য এত কষ্ট করতে হয় না। তবু বাঙালীর খাদ্য তালিকায় চিঙড়ি মাছের এক স্বতন্ত্র স্থান। যে কোনো ভাবেই প্রস্তুত হোক না কেন, তা আমাদের রসনার তৃপ্তি যোগায়। আজ চিঙড়ি মাছের অল্প পরিচিত একটা রান্নার কথা লিখছি, যা আশা করি আপনাদের সকলের পছন্দ হবে। এই পদটির নাম - চিঙড়ি ঘোঁকা।

উপকরণঃ

মটর ডাল : ১০০ গ্রাম, ছোট চিঙড়ি: ২০০ গ্রাম, আদা বাটা: ১ চা চামচ, পেঁয়াজ বাটা: ২টি পেঁয়াজের, রসুন বাটা: ২ কোয়া, আলু: ২ টি, ঘি: ২বড় চামচ, গরম মশলা: ১ চা চামচ, নুন ও চিনি: আন্দাজমতন, তেল: ১/২ কাপ, হলুদ: ১ চা চামচ

প্রণালীঃ

মটরডাল ও চিঙড়ি মাছ সামান্য ভাপিয়ে নিয়ে mixer এ দিয়ে মিহি করে নিন। নুন ও চিনি দিয়ে গরম তেলে কষিয়ে নিন। কষা হয়ে গেলে একটি থালায় ছড়িয়ে দিন। ছুরি দিয়ে ছোট ছোট চৌকো পিস করে নিন। আলু দুটো ডুমো করে কেটে অল্প ভাজুন। ডাল ও চিঙড়ির ঘোঁকাগুলিও ভেজে রাখুন। এইবার তেলে সমস্ত মশলা কষে নিন। তাতে ভাজা আলু ও জল দিন। আলু সেদ্ধ হলে ঘোঁকা দিয়ে অল্প আঁচে পাঁচ মিনিট ফোটান। গরম মশলা গুঁড়ো ও ঘি দিয়ে নামিয়ে নিন।

- রীতা কর,

ইয়োকোহামা, জাপান